पातसंशय भेदनप्रकारः —

खाग्नेन्दुद्विरसा धृतिर्नगशराः सायर्कभान्वोः पदै-
क्येऽङ्कानि त्र्यगरुद्रनूपतिनखास्त्र्यक्षोणि भेदे क्रमात्।
क्षेपः षड्दश चार्ककोटिजलवेध्यंशप्रमाद्यैक्यकं
शेषांशैक्यवधोऽभुभागसहितं सन्धिर्भवेत् क्षेपयुक्॥
सायर्कभुजांशका यदाल्पाः सन्धेः क्रान्तिसमत्वमस्ति चेत्।
अधिका नतदा भुजांशसन्ध्यन्तरसादृश्यमिहापमान्तरं स्यात्॥

अन्वयः – सायर्कभान्वोः पदैक्ये खाग्नेन्दुद्विरसाः धृतिः नगशराः भेदे त्र्यगरुद्रनूपतिनखाः त्र्यक्षीणि अङ्कानि। षट् दश च क्रमात् क्षेपः, अर्ककोटिजलवेध्यंशप्रमाद्यैक्यकं शेषांशैक्यवधोऽभुभागसहितं क्षेपयुक् सन्धिः भवेत्।

यदा सायर्कभुजांशकाः सन्धेः अल्पा क्रान्तिसमत्वम् अस्ति। अधिकाः चेत् तदा न इह भुजांशसन्ध्यन्तरसादृश्यम्, अपमान्तरं स्यात्।

तारा – सायर्कभान्वोः पदैक्यखण्डे सति खाग्नेन्दुद्विरसाः क्रमेण 0, 0, 1, 2, 6 धृतिः 18, नगशराः 56 इति सप्तखण्डानि, भेदे पदभेदखण्डे, त्र्यगरुद्रनूपतिनखाः 3, 6, 11, 16, 20 त्र्यक्षीणि 23, इति षट् खण्डानि स्युः। तथा षट् 6, दश च 10, क्रमात् क्षेपः। अथ अर्ककोटिजलवेध्यंशप्रमाद्यैक्यकं सूर्यकोट्यंशपञ्चमभागसमशाकलैक्यं कार्यम्। शेषांशैक्यवधोऽभुभागसहितं क्षेपयुक् सन्धिः भवेत्।

यदा सायर्कभुजांशकाः सन्धेः सन्धिभागतः, अल्पाः तदा क्रान्तिसमत्वं, पातः अस्ति, चेत् अधिकाः तदा इह भुजांशसन्ध्यन्तर-सादृश्यं सायर्कभुजलवसन्ध्यंशान्तरवत्, अपमान्तरं क्रान्त्यन्तरं स्यात्।

भावार्थः – राशिचक्र के चतुर्थांश को पद (चतुर्थांश) कहते हैं। पहले और तीसरे पद (मेष से लेकर मिथुन के अन्त तक के और तुला

एकदापातसम्भवाऽसम्भवज्ञानप्रकारः —

गोलैक्ये सायर्कभान्वोः सदा स्यात्पातोऽन्यत्वे चेद्रवेर्बाहुभागाः।
पञ्चेषुभ्योऽल्पास्तदास्त्येव पातः पुष्टाश्चेत्संशयस्तं च विद्युः॥

अन्वयः — सायर्कभान्वोः गोलैक्ये सदा पातः स्यात्, चेत् अन्यत्वे रवेः बाहुभागाः, पञ्चेषुभ्यः अल्पाः तदा पातः अस्ति एव, पुष्टाः चेत् तत्संशयः तं च विद्युः।

टीका — सायर्कभान्वोः सायनसूर्यराह्वोः, गोलैक्ये सति, सदा पातः स्यात्। गोलस्याऽन्यत्वे चेत्, रवेः सूर्यस्य, बाहुभागाः भुजांशाः, पञ्चेषुभ्यः पञ्चपञ्चाशत्सङ्ख्यकेभ्यः, अल्पाः हीनाः, तदा पातः अस्ति एव, नात्र सन्देहः। पुष्टाः अधिकाः चेत्, तत् पातसम्भवसंशयो भवति, तं संशयं विद्युः सूरी कुर्मः, इति ग्रन्थकृदुक्तिः।

भावार्थः — सायनसूर्य में सायनराहु को जोड़कर जो योगफल मिले, उसको सायर्क कहते हैं। यदि सायर्क और सायनसूर्य एक गोलीय हो अथवा सायर्क और सायनसूर्य दोनों भिन्न गोलीय हों, तो सूर्य के भुजांश करें। वे भुजांश ५५ अंशो की अपेक्षा कम हों तो पात अवश्य होगा। यदि वे एक गोलीय न हों और सूर्य के भुजांश ५५ अंशो की अपेक्षा अधिक हों तो पात होने का सन्देह होता है।

डॉ० सुधीर कुमार
सहा०प्राचार्य (ज्योतिष)
रा०उ०सं०महावि० सुखसेना,
पूर्णियाँ।

से लेकर धनु के अन्त तक के भाग) को विषमपद कहते हैं और दूसरे तथा चौथे पद (कर्क से लेकर कन्या के अन्त तक के तथा मकर से लेकर मीन के अन्त तक के भाग) को समपद कहते हैं।

सायर्क और सायनसूर्य ये दोनों एक पद (विषम अथवा समपद) में हों, तो सायनसूर्य के केवल कोट्यंशों में ५ का भाग देने से जो लब्धि मिले, उसके बराबर नीचे दिये पदैक्य खंडों का योग करें। यदि सायर्क और सायनसूर्य भिन्न-भिन्न पदों में हों, तो नीचे दिये हुए पदभेदखण्डों का योग करें। लब्धि के अंक में १ जोड़ करके योगफल में आये हुए अंक के बराबर अंक से शेष अंशादि को गुणा करें। गुणनफल में ५ का भाग दें। जो अंशादि लब्धि मिले, उसमें पहले अंशात्मक अंकों को जोड़ देने से योगफल मध्यमसन्धि होती है। इसमें यदि सायर्क और सायनसूर्य समपद में हो, तो ६ अंश जोड़ दें। यदि भिन्न पद में हो तो १० अंश जोड़ देने से सन्धि होती है।

तदनन्तर यदि सायर्क भुजांशसन्धि के अंशों की तुलना में कम हों, तो उसको क्रान्तिसाम्य कहते हैं। इस स्थिति में पात होता है और अधिक हो तो पात नहीं होता। जब पात न हो तो भुजांश और सन्ध्यंशों का परस्पर अन्तर करने से प्राप्त शेष क्रान्त्यन्तर होता है। ख० अक्र० इन्दु १ द्वि २ रस ६ धृति १८ नगशर ५७ ये सायर्क और सायनसूर्य के पदैक्यखण्ड हैं। त्रि ३ अग ७ रुद्र ११ भूपति १६ नख २० त्र्यक्षि २३ ये सायर्क और सायनसूर्य के पदभेदखण्ड हैं। और ६, १० ये क्रमशः क्षेपकांक हैं।

डॉ० सुदिष्ट कुमार
सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)
रा०उ० सं० महावि० सुखसेना,
पूर्णियाँ